❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अहं सूर्य इवाजनि।
सामवेद 152

मैं सूर्य के समान औजस्वी, तेजस्वी, नियमित जीवन वाला गुणग्राहक और पवित्र हो जाऊं।

May I with Your grace become, Vigorous Lustrous Punctual, recipient of good qualities & pure like the sun.

वर्ष 41, अंक 29 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 मई, 2018 से रविवार 13 मई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 हेतु सार्वदेशिक सभा सम्पर्क अभियान आरम्भ

म्यांमा (बर्मा) में छह स्थानों एवं आर्यसमाज बैंकॉक में बड़ी बैठकें सम्पन्न

माण्डले, जयपुर, जियावाडी, शिवपुर, तथेगांव और रंगून के आर्यजन भी हुए बैठकों में शामिल

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा (बर्मा) के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल जी के नेतृत्व में समिति का गठन

हर बैठक में देखने को मिला अलग ही उत्साह : सैंकड़ों की संख्या में हुए आर्यजन सम्मिलित

आर्य समाज बैंकॉक से अनेक परिवार होंगे सम्मिलित

बर्मा सम्मेलन के अवसर पर घोषित गुरुकुल की स्थापना के सम्बन्ध में हुई सार्थक चर्चा : स्थान का चयन शीघ्र

म्यांमा के आर्यजन परिवारों के साथ भारत जाने की तैयार करें – अशोक खेत्रपाल, प्रधान, म्यांमा सभा

महासम्मेलन में भाग लेने हेतु थाईलैंड में करेंगे सम्पर्क अभियान – एस.पी.सिंह, प्रधान, आ.स. बैंकॉक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी पूरे जोर शोर से चल रही है। कार्यक्रम की तैयारी को लेकर विभिन्न देशों में जनसंपर्क बैठक आयोजित कर सप्रेम निमन्त्रण पत्र भेंट किये जा रहे हैं ताकि समस्त विश्व के आर्यजन एक मंच पर इकट्ठे होकर वेद की विचारधारा और महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी के सपने को घर-घर तक पहुंचाने का कार्य कर सकें।

इस वर्ष 25 से 28 अक्टूबर तक चलने वाले आर्य महासम्मेलन की तैयारी के चलते निमन्त्रण पत्र अपने पड़ाव म्यामां पहुंचा। आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामां के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल एवं अन्य पदाधिकारियों समेत वहां के आर्यजनों ने निमन्त्रण पत्र का स्वागत करते हुए कहा कि बुद्ध की भूमि बर्मा म्यामां से बड़ी संख्या में आर्यजन दिल्ली महासम्मेलन में पहुंचेंगे ताकि इसे भव्य स्तर पर मनाया जा सके। निमंत्रण पत्र अपने अगले पड़ाव पर थाईलैंड पहुंचा वहां आर्य समाज बैंकॉक के प्रधान श्री एस. पी. सिंह जी ने पत्र का स्वागत करते हुए कहा बैंकॉक के सभी आर्य परिवार महासम्मेलन में शामिल होंगे।

सैंकड़ो की संख्या में पधारेंगे म्यांमा के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से आर्यजन : बर्मा में पंजीकरण आरम्भ

का केंद्र बनेगा। कार्यक्रम 25 से 28 अक्टूबर तक चलेगा। इसमें एक साथ 10 हजार लोग यज्ञ कर भारतीय धराधाम पर नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे। यह सम्मेलन आर्यों की एकता एवं अखण्डता का प्रतीक होगा तथा एक बार फिर आर्य समाज की ओर से समस्त विश्व को सनातन संस्कृति एवं वैदिक धर्म की विचारधारा वसुधैव कुटुम्बकम् और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का संदेश दिया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के अधिकारियों के साथ बैठक को सम्बोधित करते श्री विनय आर्य जी एवं बैठक में उपस्थित बर्मा प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एवं कार्यकर्ता

आर्यसमाज बैंकॉक के अधिकारियों के साथ बैठक एवं यज्ञ पत्रों का सैट भेंट

आर्यसमाज जयपुर में आर्य कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते ही बनता था

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य म्यामां और बैंकॉक के आर्य समाजों के सभी प्रतिनिधियों से मिले और कहा कि इस बार का आर्य महासम्मेलन वैश्विक स्तर पर आकर्षण

महासम्मेलन के मंच से आर्य समाज एक बार फिर स्पष्ट संदेश देगा कि हमारे पूर्वज वैदिक परम्परा में विश्वास करते थे तथा मूर्ति पूजा, अवतारवाद, बलि, झूठे

– *शेष पृष्ठ 4 पर*

वेद-स्वाध्याय

दान प्रशंसा

न वा उ देवाः क्षुधमिद् वधं ददुरुताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यत्युतापृणन् मर्डितारं न विन्दते।। -ऋ. 10/117/1
ऋषिः **भिक्षुः**।। देवता - **धनान्नदानम्**।। छन्दः **निचृज्जगती**।।

शब्दार्थ- देवाः = देवों ने **न वै उ** = न केवल **क्षुधं इत्** = भूख-ही-भूख के रूप में ही **वधम्** = मौत **ददुः** = दी है **उत** = अपितु **आशितम्** = खाते पीते अमीर को भी **मृत्यवः** = नाना तरह से मौत **उपगच्छन्ति** = आती हैं। **उत उ** = और **पृणतः** = देने वाले की **रयिः** = धन-सम्पत्ति **न** = नहीं **उपदस्यति** = क्षीण होती, कम होती **उत** = अपितु **अपृणन्** = जो दान न देने वाला है वह कभी **मर्डितारम्** = अपने किसी सुख देने वाले को **न विदन्ते** = नहीं पाता, नहीं प्राप्त करता।

विनय - देवों ने मनुष्य को भूख क्या दी है, एक मौत दे दी है। दुनिया भूख, बेकारी, गरीबी के मारे मरी जा रही है। इसलिए दूसरे को खिलाकर खाना, गरीबों के पेट के सवाल को हल करना वास्तव में बड़ा भारी पुण्य है, बड़ा भारी कर्त्तव्य है। यह मरने से बचाना है, पर इसका यह अर्थ नहीं कि भूख और गरीबी का ही मरने से कोई सम्बन्ध है। परमेश्वर ने केवल भूखरूप में ही मौत नहीं दी है, अपितु जो खूब खाते-पीते अमीर लोग हैं उनपर भी उनकी मौत नाना प्रकार से पहुंचती है। ऐसा अमीर-से-अमीर कौन मनुष्य है जो मरेगा नहीं? अतः दूसरे बेशक कहीं भूखे मरते हों, मेरा तो पेट भर रहा है इस प्रकार निश्चिन्त हो जाना मूर्खता है। जिसके पास है, उसे ज़रूरतवाले को देना ही चाहिए। हम अकेले नहीं हैं, किन्तु हमारा जीवन सम्पूर्ण जनसमाज के साथ जुड़ा हुआ है। यदि हम इतना समझते हों तो हमारा यह डर हट जाए कि दूसरे को दान देने से हमारा धन घट जाएगा। हम जिस पात्र को धन देते हैं वह हम ही हैं और उस दान से जो एक आवश्यकता पूरी होती है उससे हमारी उन्नति होती है और अनत में हमारा वैयक्तिक सुख और धन भी बढ़ता है। हम रोज़ देखते हैं कि जो ज़रूरत पर देता है, उसे ज़रूरत पर उदारतापूर्वक मिलता है। जो न देने वाले होते हैं वे समाज से कटे हुए-से रहते हैं, उनका न कोई मित्र होता है न उन्हें कोई सुख-सहायता पहुंचाने की आवश्यकता समझता है। मनुष्य धन से नहीं जीता। जिनके बिना वह रह नहीं सकता है वह तो ज्ञान, बल, सुख, सौहार्द, प्रेम आदि अत्यन्त मूल्यवान् वृत्तियां हैं। इसलिए यद्यपि इतना ठीक है कि संसार में भूखे के साथ पेट भरे भी मरते ही हैं और दान देने वाले और न देने वाले दोनों प्रकार के पेट भरे मरते हैं; तो भी भेद यह है कि देने वाले को तो ये अमूल्य जीवनदायी सम्पत्तियां मिलती हैं और उसका धन भी घटता नहीं; पर न देनेवाला पुरुष इनसे वञ्चित होकर अपना सुखहीन संकुचित मुर्दा-सा ही जीवन बिताता है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या ये 21वीं सदी का भारत है?

.....गरीब अपनी गरीबी के लिए जिम्मेदार हो सकता है लेकिन अपने अंधविश्वास के लिए वह जिम्मेदार नहीं है उसकी जिम्मेदार है ये लोग जो सब कुछ पाने के लालच में जियारत कर चादर चढ़ा रहे हैं। ये लोग और मीडिया ही मिलकर बाबा खड़े करते हैं, पीर और मजार खड़ें करते हैं बाद में ये लोग अपने चैनल खड़े कर समाज की धार्मिक सोच को अपने चंगुल में जकड़ लेते हैं। इतने बड़े समाज को प्रभावित करने वाले इन कार्यक्रमों की कोई समीक्षा पेश नहीं की जाती हैं......

धर्म जगत की परिभाषा में नास्तिक उस व्यक्ति को समझा जाता है जो ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है, उसके होने या न होने में संदेह पैदा करता है। लेकिन जो लोग ईश्वर से भी अलग किसी मजार, कब्र, मूर्ति या पीर आदि में अपार श्रद्धा और विश्वास व्यक्त करते हो उन्हें क्या कहा जाये? देखा जाए तो दुनिया में सबसे अधिक तादात आज इन्हीं लोगों की है। पर प्रश्न हमारी बौद्धिक क्षमता पर तब खड़ा होता जब हम यह तय न कर पाए कि इन लोगों को आस्तिक कहें या नास्तिक, धार्मिक ढोंगी कहे या अंधविश्वासी?

बहराल हाल ही में भारतीय टीम के सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह अजमेर शरीफ पहुंचे। जहां उन्होंने अपने परिवार के साथ अकीदत की चादर और फूल पेश किए। बताया जा रहा है कि शिखर धवन अभी क्रिकेट में चोट और अच्छा न खेल पाने से दुखी है इस कारण वह रूहानी ताकतों का सहारा लेना चाह रहे हैं।

इस रूहानी ताकत को आप कुछ इस तरह समझ सकते कि शिखर धवन के बल्ले के सामने गेंद आये और वह चौंके या छक्के पर चली जाये शायद कुछ ऐसी ही ताकत वे दरगाह पर मांगने गये थे। मेरा मकसद किसी की आस्था पर सवाल करना नहीं है लेकिन क्या कोई बता सकता है कि जिसकी दरगाह में वे गये हैं वह जीवन में कितना क्रिकेट खेला जो यह रूहानी ताकत उन्हें बक्श देंगे? बेहतर होता शिखर धवन फिटनेस के लिए किसी अच्छे ट्रेनर और खेलने के लिए किसी अच्छे बल्लेबाज से सलाह मशविरा लेते।

भारत धार्मिक आस्थाओं के देश के रूप में जाना जाता था लेकिन अब यह धीरे-धीरे अंधविश्वास और पाखण्ड का देश बन चुका है। आज हम गहराई से देखें तो एक तो मजार और दूसरे कथित बाबा भारतीय समाज का अहम हिस्सा बन चुके हैं। लोगों की दैनिक की जिंदगी में कथित बाबा या पीर मजार अब एक सेवा प्रदाता कम्पनी की तरह बन चुके है। जिसको जो चाहिए वह मिल जायेगा अर्थात् यह लोग जनता को वह जरूरी सेवाएं देने का कार्य कर रहे हैं जैसे फ्लिपकार्ड और स्नेपडील जैसी कम्पनियां यानि इन्हें कुछ पैसा देकर इनसे बदले में सामान के बजाय पैसा पावर, नाम, रुतबा शोहरत आदि जितना चाहो लिया जा सकता हैं। हालाँकि गारंटी कुछ नहीं है एक चादर से लेकर कोई मोटी रकम चुकाकर भी आप विश्वास के सहारे ही लौट सकते हैं।

इन कम्पनियों के कर्मचारी जिन्हें भक्त या सेवक कहा जाता है इनकी तारीफ इस ढ़ंग से करते हैं जैसे बस इनके पास जाने की देर है इसके बाद दुनिया को अपनी मुट्ठी में करना कोई बड़ी बात नहीं है। वे बताते हैं खर्चा कुछ खास नहीं, बस श्रद्धा से जो चढ़ाना हो चढ़ा दो, बिगड़े सारे काम मिनटों में बन जायेंगे। मजार या बाबा की कृपा हुई तो झमाझम खुशियों की बरसात होगी। मुंह से निकलते ही हर मुराद पूरी होगी। इस तरह के झूठ बोलते हुए उनकी आँखों में एक विशेष चमक देखी जा सकती है।

जो मीडिया शिखर धवन के दरगाह पर जाने को जियारत बता रही है। आज इसे बहुत बड़ी भक्ति साधना और शांति के मार्ग रूप में दिखा रही है। कल परसों उसी मीडिया के यहाँ अंधविश्वास पर कार्यक्रम चल रहे थे। आसाराम के जेल जाने के बाद बताया जा रहा था कि गरीब लोग कैसे इन बाबाओं के झांसे में आ जाते हैं।

बाबा और अन्धविश्वास की खबरों के बीच विज्ञापन को सेंडविच की तरह परोसने वाले लोग अब क्यों नहीं बताते कि ये बाबा और मजार गरीबों ने खड़ें नहीं किये, इन्हें खड़े करने वाले लोग भी ये अमीर और सेलिब्रेटी हैं। ये नेता हैं, अभिनेता हैं, लेकिन गरीब जब सुख की तलाश में किसी मजार और बाबा की शरण में जाता है तो अंधविश्वासी हो जाता है, लेकिन जब अमीर सुख और लालसा पाने के नाम पर किसी मजार पर जाता है तो वह खबर धर्म शांति और सदभावना की खोज बन जाती है। इसे भी बेखोफ अंधविश्वास कहिये वरना आपकी जिम्मेदारी भी संदेह के दायरे में खड़ी दिखाई देगी।

गरीब अपनी गरीबी के लिए जिम्मेदार हो सकता है लेकिन अपने अंधविश्वास के लिए वह जिम्मेदार नहीं है उसकी जिम्मेदार है ये लोग जो सब कुछ पाने के लालच में जियारत कर चादर चढ़ा रहे हैं। ये लोग और मीडिया ही मिलकर बाबा खड़े करते हैं, पीर और मजार खड़ें करते हैं बाद में ये लोग अपने चैनल खड़े कर समाज की धार्मिक सोच को अपने चंगुल में जकड़ लेते हैं। इतने बड़े समाज को प्रभावित करने वाले इन कार्यक्रमों की कोई समीक्षा पेश नहीं की जाती है।

टी.वी. पर सुबह खबर चल रही होती है कि 'सात जनम तक कैसे मिलेगा पैसा ही पैसा' इस उपाय से मिलेगी अखण्ड लक्ष्मी, इस यंत्र और इस पूजा के तरीके से होगा बेड़ा पार। सोचिए कौन इस लालच में नहीं पड़ेगा जो लोग एक जन्म में दो वक्त की रोटी के लिए दिन रात मेहनत मजदूरी कर रहे हैं आखिर वे इसमें क्यों निवेश न करे?

देश में बीपीओ जैसे सेक्टर का व्यापार घट रहा हैं लेकिन बड़ी तेजी से मजारों, पीरों और बाबाओं का कारोबार बढ़ रहा है। यदि रफ्तार यही रही जल्दी भारतीय अर्थ व्यवस्था भी इसी अंधविश्वास के दल-दल में लिपटी खड़ी मिलेगी। आज भारत के किसी भी छोटे शहर या कस्बे में यहाँ तक कि गांवों में यह कारोबार अपनी जड़ें जमा चुका है। अमीर लोगों के अंधाधुंध धार्मिक करण का नतीजा यह हुआ कि अब हर गली में सौतन-दुश्मन से छुटकारा दिलाने वाले, जमीन जायदाद के मामले मिनटों में सुलझाने वाले, सेकेण्डों में सब दुःख दर्द हरने वाले बंगाली बाबा बैठ गये। दिल्ली के जमनापार में आप किसी ओटो में बैठ जाईये हर ओटो में पांच दस बाबाओं के विजिटिंग कार्ड सीट के ऊपर नीचे जरूर मिलेंगे।

दुःख की बात यह है कि आज आम भारतीय को जीने के लिए धर्म के नाम पर पाखंड की खुराक चाहिए. कोई भी सफलता पाने के लिए प्रार्थना की जगह ढ़ोंग सिखाया जा रहा है प्रयास और आत्मविश्वास को समाप्त कर मायावी दुनिया खड़ी की जा रही है। लोग इतने डरे हुए है कि दुनियावी चुनौतियों से निपटने की अपनी शक्ति समाप्त कर चुके हैं।

- सम्पादकीय

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दलितों के बौध बनने से क्या होगा?

....आज भले ही इस्लाम और ईसाइयत समतावादी धर्म होने का दावा करते हों लेकिन हिन्दू समाज से जो भी लोग इनमें गये वे अपनी सामाजिकता और जाति साथ लेकर गये इसलिए मुसलमानों में सैय्यद और दलित के बीच वही भेद है जो हिन्दू समाज में पंडित और शूद्र के बीच है। ईसाइयत को भी जाति प्रथा ने नहीं छोड़ा यानि भारतीय परिवेश में जाति धर्म से बड़ी ताकत साबित हुई लोगों ने धर्म छोड़े और स्वीकारे लेकिन उनकी जाति चेतना वही और वैसी ही बनी रही। आखिर ईसाई के तौर पर ही उन्हें दलित बनाए रखने की जिद्द क्यों?....

अप्रैल महीने की 29 तारीख शायद धर्म में डुबकियाँ लगाने का दिन था। खबर ही ऐसी थी कि गुजरात के उना में करीब 450 दलितों ने धर्म परिवर्तन कर लिया। अपने ऊपर हो रहे कथित अत्याचार के चलते मोटा समाधियाला गांव के करीब 50 दलित परिवारों के अलावा गुजरात के अन्य क्षेत्रों से आए दलितों ने यहां एक समारोह में बौद्ध धर्म अपना लिया। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें हिन्दू नहीं माना जाता, मंदिरों में नहीं घुसने दिया जाता, इसलिए उन्होंने बुद्ध पूर्णिमा के दिन हिन्दू धर्म छोड़ दिया।

अब जो लोग सोच रहे है ये नवबौद्ध सर मुंडाकर हाथ में घंटी की जगह झुनझुना पकड़कर जल्दी ही दलाई लामा, तिब्बती या जापानी बौद्ध भिक्षु बन जायेंगे तो बेकार सोच है। हाँ ये जरूर है अगर ये धर्म परिवर्तन अम्बेडकर के समय में ही हो गया होता तो शायद लोग भारतीय बौद्ध धर्म को देखने-समझने के लायक जरूर हो गये होते। मंदिर-मस्जिद के झगड़ों की तरह ही मठों के आपसी झगड़ों को भी देख चुके होते। लेकिन इससे भी बड़ा सवाल यह है कि क्या एक धर्म के छोड़ने से और नव धर्म के पकड़ने से सामाजिक समस्याओं का समाधान हो सकेगा?

ये आये दिन की बात हो गयी है कि फला जगह दलितों पर हमला हुआ और उन्होंने धर्म परिवर्तन की धमकी दी। इसके बाद कुछेक वामपंथी और कुछ दलित चिंतक मैदान में आकर कहते हैं कि जो हिन्दुत्व दलितों को बराबरी नहीं दे सकता, उससे निकल जाना ही बेहतर है। अक्सर ऐसे बुद्धिजीवी दो अलग-अलग शब्दों, दलित और हिन्दू का इस्तेमाल करते हैं। वे तर्क देते है कि हिन्दू तो सिर्फ स्वर्ण हैं और दलितों को अधिकार ही नहीं तो हिन्दू कैसे? इसके बाद धर्मातरण का कुचक्र चलता है आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर लोगों को उठाकर इस धर्म से उस धर्म में पटक दिया जाता है। ऊना में कथित गौरक्षकों द्वारा जो हुआ मैं उसका समर्थन नहीं करता। दोषियों को संविधान के अनुसार सजा मिलनी चाहिए। बस सवाल यह है कि क्या मात्र एक झगड़े की वजह से अपना मूल धर्म छोड़ देना चाहिए?

अमेरिका में काले और गोरे लोगों के बीच एक लम्बे संघर्ष का इतिहास रहा है। कालों के साथ इस हद तक बुरा बर्ताव था कि उन्हें नागरिक अधिकारों के प्रति लम्बा संघर्ष करना पड़ा, अमेरिका का संविधान लागू होने के सेंकड़ों वर्षो बाद उन्हें तब कहीं जाकर 1965 में गोरे नागरिकों के बराबर मताधिकार दिया गया। इस लम्बे संघर्ष के कालखण्ड में क्या कोई बता सकता है कितने काले लोगों ने अपना धर्म छोड़ा? गोरों और कालों के बीच सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक असमानताएं आज भी बनी हुई हैं। जातीय भेद अमेरिका की भी कड़वी सच्चाई है। इसी वजह से गोरों की बस्तियों में कालों के घर बिरले ही मिलते है।

बात इस्लाम की करें तो अहमदिया समुदाय के लोग स्वयं को मुसलमान मानते हैं परन्तु अहमदिया समुदाय के अतिरिक्त शेष सभी मुस्लिम वर्गो के लोग इन्हें मुसलमान मानने को हरगिज तैयार नहीं होते। बल्कि देश की प्रमुख इस्लामी संस्था दारुल उलूम देवबंद ने वर्ष 2011 में सऊदी अरब सरकार से मांग की थी कि अहमदिया समुदाय के लोगों के हज करने पर रोक लगाई जाए। संस्था ने इस समुदाय के लोगों को गैर मुस्लिम लिखते हुए कहा था कि शरिया कानून के मुताबिक गैर मुस्लिमों को हज करने की इजाज़त नहीं दी जा सकती है। इस सबके बावजूद क्या कोई बता सकता है कि अहमदिया समुदाय के लोगों ने इससे प्रताड़ित होकर इस्लाम छोड़ दिया?

चलो ये भी छोड़ दिया जाये तो शिया-सुन्नी विवाद इस्लाम के सबसे पुरानी और घातक लड़ाइयों में से एक है। इसकी शुरुआत इस्लामी पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु के बाद, सन् 632 में, इस्लाम के उत्तराधिकारी पद की लड़ाई को लेकर हुई थी जो आज तक जारी है जिसमें करोड़ों लोग अपनी जान गँवा चुके है लेकिन क्या कोई बता सकता है कितने शिया और कितने सुन्नी लोगों ने इस्लाम छोड़ दिया?

लेकिन इसके उलट हमारे यहां यदि एक कथित ऊँची जाति का अशिक्षित बेकारा जिसकी खोपड़ी में जाति की सनक है अगर वह किसी दलित को धमका दे तो अनेकों लोग कूद पड़ते है कि ब्राह्मणों ने बहुत ऊंच-नीच फैला रखी है। कोई मनुस्मृति पर आरोप लगाएगा तो कोई धर्म पर। हम जातिगत भेदभाव से इंकार नही कर रहे हैं और ना ही इसका समर्थन करते लेकिन धर्म छोड़ना कोई समाधान कैसा हो सकता है? मुझे नहीं लगता पलायन से कोई भी दलित सम्मान कमा सकता है सम्मान हमेशा संघर्ष को मिलता है। धर्म पर जितना अधिकार एक कथित ऊँची जाति के व्यक्ति का है उतना ही अन्य लोगों का भी है।

आज भले ही इस्लाम और ईसाइयत समतावादी धर्म होने का दावा करते हों लेकिन हिन्दू समाज से जो भी लोग इनमें गये वे अपनी सामाजिकता और जाति साथ लेकर गये इसलिए मुसलमानों में सैय्यद और दलित के बीच वही भेद है जो हिन्दू समाज में पंडित और शूद्र के बीच है। ईसाइयत को भी जाति प्रथा ने नहीं छोड़ा यानि भारतीय परिवेश में जाति धर्म से बड़ी ताकत साबित हुई लोगों ने धर्म छोड़े और स्वीकारे लेकिन उनकी जाति चेतना वही और वैसी ही बनी रही। आखिर ईसाई के तौर पर ही उन्हें दलित बनाए रखने की जिद्द क्यों? क्या किसी चिंतक के पास है इसका जवाब है? राजनीतिक दलों से इस बारे में कुछ उम्मीद करना बेमानी होगा, जिन्हें सिर्फ दलितों का वोट चाहिए। भले ही नवबौद्ध बनकर दें, दलित ईसाई के तौर पर दें या फिर इस्लाम की निचली कड़ी से जुड़कर।

आजकल अन्य व्यापारों की तरह धर्म-परिवर्तन ने भी एक व्यापार का रूप ले लिया है। बहुत पहले ईसाई धर्म-प्रचारकों की एक रिपोर्ट पढ़ी थी जिसमें बताया गया था कि प्रत्येक व्यक्ति का धर्म बदलने में कितना खर्च हुआ, और फिर अगली फसल के लिए बजट पेश किया गया था। जबकि चर्च में दलितों से छुआछूत और भेदभाव बड़े पैमाने पर मौजूद है। कुछ गिने चुने लोग बिशप बन जाते हैं पर दलित तो दलित ही रह जाते हैं। आखिर वे हिन्दू से निकलकर भी दलदल में क्यों हैं? इसलिए भी कहना पड़ेगा धर्म परिवर्तन के अलावा सचमुच अगर कोई विकल्प न हो पर धर्म परिवर्तन से भी जाति प्रथा से कोई मुक्ति नहीं है। हमें जातिप्रथा के अंत के विकल्प तलाशने होंगे, नये तरीके खोजने होंगे, नये ढ़ंग से संघर्ष चलाना पड़ेगा भारत को धर्मो के आपसी टकराव का देश नहीं बल्कि एक समान समाज का देश बनाना होगा।

- विनय आर्य, महामन्त्री

क्रान्तिकारियों की कथा

क्रान्ति-आन्दोलन और अस्त्र संग्रह

गतांक से आगे -

चौरी-चौरा काण्ड के सिलसिले में पुलिस ने जिसे चाहा मनमाने ढंग से सताया। जिसे चाहा जेल में ठूँसा। अभियुक्तों के मुक़द्दमों और क़ानूनी संरक्षण के लिए भी कांग्रेस ने रत्ती-भर सहयोग नहीं दिया। हज़ारों मां-बहनों की इज़्ज़त सरेआम लुटी। किसानों पर लाठियां बरसीं। इन निर्मम अत्याचारों से जनता भयभीत हो उठी। तभी देश का उत्तेजित युवक-वर्ग सामने आया। वे ब्रिटिश आतताइयों से भिड़ने के लिए छटपटा रहे थे। देश के इन दीवानों को संगठित करने का ज़िम लिया सधे-सधाए क्रान्तिकारी हाथों ने। इस आन्दोलन का सूत्रपात काशी में हुआ।

सन् 1922 में बंगाल के बाढ़-पीड़ितों की सहायतार्थ काशी में एक समिति गठित हुई थी। उसका काम एक वर्ष तक चलता रहा। इसी की आड़ में रासमोहन भट्टाचार्य ढ़ाका से वाराणसी आये थे क्रान्ति की ज्योति जगाने। वे क्रान्तिकारियों की जनक संस्था 'अनुशीलन समिति' की ओर से भेजे गये थे। राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ बख़्शी आदि नवयुवक उनसे बहुत प्रभावित हुए। तत्पश्चात्, योगेशचन्द्र चटर्जी उत्तर भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन के संगठन के लिए काशी आये। जब शचीन्द्रनाथ सान्याल को पता चला कि अनुशीलन ग्रुप वाले वाराणसी में अपना दल संगठित कर रहे हैं, तो वे भी इलाहाबाद से बनारस आ गये और अपना एक संगठन क़ायम किया।

इस प्रकार क्रान्तिकारियों के दो दल हो जाने से उनके कार्यों में टकराव पैदा होने की स्थिति आ गयी। शक्ति के अलावा रुपया-पैसा भी दो गुना ख़र्च होने लगा। यह स्थिति दोनों ही संस्थाओं के लिए घातक थी। इस कारणवश सन् 1923 के अन्त में दोनों मिलकर एक हो गये और इस नयी संस्था का नाम रखा गया 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन'। एक यलो पेपर 'दि गोल प्रकाशति करके दल का लक्ष्य घोषित किया गया-शोषणहीन और दरिद्रता से मुक्त समाज की स्थापना करना। पार्टी के पाँच विभाग क़ायम हुए : 1. प्रचार कार्य, 2. नौजवानों की भर्ती, 3. आतंक फैलाकर ब्रिटिश सरकार को चुनौती देना, 4. धन और शस्त्र-संग्रह करना तथा 5. विदेशों से सम्बन्ध क़ायम करना।

अनुशीलन समिति की सेंट्रल कमेटी ने यू.पी. का चार्ज दिया शचीन्द्रनाथ सान्याल को। उन्होंने योगेशचन्द्र चटर्जी को कार्य-विस्तार के लिए बनारस से कानपुर रवाना किया। 3 अक्टूबर 1924 को पीली कोठी धर्मशाला, कानपुर, में प्रान्तीय कमेटी की एक गुप्त बैठक हुई, जिसमें संगठन-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। तत्पश्चात्, हथियारों की तलाश में शचीन्द्र सान्याल को मद्रास जाना पड़ा।

- क्रमश :

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :
क्रान्तिकारी आन्दालन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्देलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन....

कर्मकाण्ड व अंधविश्वासों को अस्वीकार करते थे। वैदिक संस्कृति में छुआछूत व जातिगत भेदभाव के लिए कोई जगह न उस समय थी और न आज है। हमारा मूल उद्देश्य वेद का संदेश मनुर्भव-मनुष्य बनो अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यों का निर्माण करो का रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी के चलते म्यामां में एक समिति का गठन किया गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोग महासम्मेलन में भारत पहुंचें। श्री अशोक खेत्रपाल जी को सार्वदेशिक सभा की ओर से समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

इस दौरान विनय आर्य वहां के उत्साहित आर्य समाज के कार्यकर्ताओं समेत माताओं व बच्चों से भी मिले। आर्य समाज शिवपुर, मांडले हरिबस्ती रंगन समेत कई आर्य समाजों में गये, आर्य समाज जियावाडी में निमंत्रण बैठक के दौरान महिलाओं, बच्चों समेत म्यामा सभा के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल, उपप्रधान पी. के. गुलाटी, सभा मंत्री पवन कुमार समेत बड़ी संख्या में लोगों ने आने की इच्छा जताई। आप लोगों को यह जानकर अतिहर्ष होगा कि पिछले वर्ष म्यामां में आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का प्रभाव अब वहां देखने को मिल रहा है। वहां के लोगों ने अति उत्साह के साथ-साथ कई नई आर्य समाजों का गठन भी किया है तथा भवनों का निर्माण भी शुरू हुआ है और गुरुकुल खोलने की तैयारी भी चल रही है। अपनी वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए कई लोगों ने आर्य महासम्मेलन में संयास लेने की इच्छा भी जताई।

महासम्मेलन में आस्ट्रेलिया, अमेरिका, न्यूजीलैंड, मलेशिया, मॉरीशस, नेपाल, म्यामां, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, बांग्लादेश आदि करीब 35 देशों से प्रख्यात संत महात्मा एवं ज्ञानीजन उपस्थित होकर भारत एवं विश्व की युवा शक्ति के चारित्रिक उत्थान की संकल्पना को लेकर तथा युवा वर्ग में स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करने के उद्देश्य से कदम बढ़ाने के साथ-साथ इस महासम्मेलन की गरिमा बढाएंगे। *- विनय आर्य, महामन्त्री*

ऊपर : बर्मा के आर्यजनों को सम्मेलन के विषय में बताते एवं श्री अशोक खेत्रपाल जी को निमन्त्रण पत्र भेंट करते हुए सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी। आर्यसमाज जयपुर (बर्मा) के निर्माणधीन भवन एवं के वहां के कार्यकर्ताओं के साथ श्री विनय आर्य जी।

पुस्तक परिचय

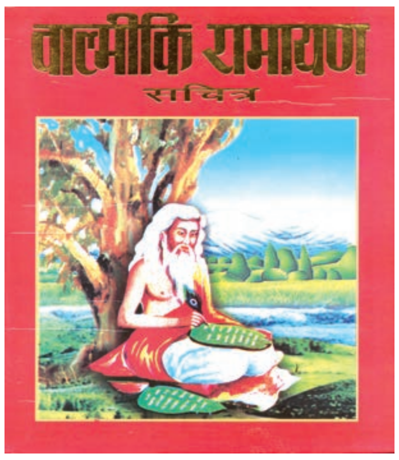

विश्व के सभी इतिहास और धर्मग्रन्थ ढाई से तीन वर्ष के अतीत से पीछे नहीं जाते किन्तु भारतीय धर्मग्रन्थ और इनके माध्यम से हम युगों पहले का अपना धर्म, संस्कृति, अपना इतिहास और सामाजिक जीवन का अध्ययन कर सकते हैं। ऐसा ही महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखा गया ग्रन्थ रामायण संस्कृत का एक अनुपम महाकाव्य है यह वैदिक स्मृति का वह अंग हैं जिसके माध्यम से रघुवंश के राजा मर्यादा पुरुषोत्तम राम की गाथा कही गयी है।

रामायण के सभी चरित्र अपने धर्म का पालन करते हैं, राम एक आदर्श पुत्र हैं और पिता की आज्ञा उनके लिये सर्वोपरि है, सीता का पातव्रत महान है, रामायण भातृ प्रेम का भी उत्कृट उदाहरण है, कौशल्या एक आदर्श माता हैं। अपने पुत्र राम पर कैकेयी के द्वारा किये गये अन्याय को भूला कर वे कैकेयी के पुत्र भरत पर उतनी ही ममता रखती हैं, हनुमान एक आदर्श भक्त हैं, और रावण के चरित्र से सीख मिलती है कि अहंकार नाश का कारण होता है। रामायण के सभी चरित्रों से सीख लेकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श करती 'रामायण' को जरूर पढ़ें व अपने ईष्ट-मित्रों को पढ़ने के लिए दें।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

दिल्ली सभा का व्हाट्सएप्प : आओ जुड़ें - साझा करें विचार

मातृशक्ति

दूध आदि से सौन्दर्य निखारें

चेहरे की झाइयाँ: बड़ के पेड़ की जटा और मसूर की दाल को दूध में पीसकर मुख पर लेप करें। झाइयां दूर होंगी।

तिल : करंजादि तेल तथा कुंकुमादि तेल मिलाकर लगाने से तिल साफ हो जाते हैं।

मस्से : हल्दी, चूना, अदरक को पीसकर मस्सों पर लेप करने से मस्से कट कर गिर जाते हैं।

मुख के गोरेपन के लिए : सरसों को पीसकर मुख पर लेप करने य हल्दी का उबटन करने से मुख में गोरापन आता है।

बाल काले करने के लिए : छोटी दूधी (एक प्रकार की बूटी) और कनेर की छाल जल में पीसकर लेप करें बाल काले होंगे।

अधिक पसीना आने पर : पकी इमली तथा उसके फूलों को पीसकर शरीर पर लेप करने से पसीना आना कम हो जाता है तथा शरीर से दुर्गन्ध आना भी रुक जाती है।

मुख के मुंहासे : भुने हुए चनों का चूर्ण 6 ग्राम, मुर्दासंग 3 ग्राम और सफेद काशगरी 4 ग्राम सबको पीस-छानकर बकरी के दूध में खरल करके रात्रि को मुहासों पर लगाकर सो जाएं। प्रात: नीम के पत्तों में औटाए जल से धोकर फिर शुद्ध जल से धो डालें। इस प्रकार कुछ दिन लगातार करने से मुंहासे दूर होकर मुख साफ हो जाता है।

शरीर का सौन्दर्य : चन्दन, केसर, अगर, लोध, खस और सुगन्धबाला इनको सिल पर पानी डालकर खूब बारीक पीस लो और उबटन की तरह शरीर पर लगाएं। कुछ दिन लगातार लगाने से शरीर सुन्दर बन जाता है।

दूसरा उपाय-सन्तरे के छिलकों को सुखा लें, फिर बारीक पीसकर रख लें। स्नान से पूर्व इसमें से थोड़ा सा चूर्ण लेरक उसमें थोड़ा आटा और तेल व पानी डालकर गाढ़ा सान लें और 5-10 मिनट तक रखा रहने दें, फिर शरीर पर भली प्रकार से मलकर गुनगुने जल से भली प्रकार मलकर स्नान कर लें। इससे शरीर सुन्दर, मुलायम तथा कोमल बन जाता है।

त्वचा को गोरा, सुन्दर तथा कोमल बनाना: बादाम, खसखस और गोला इनको बराबर-बराबर लेकर मलाई में पीस लें तथा दिन में दो बार शरीर पर उबटन के समान मलें। कुछ दिन में ही प्रत्यक्ष लाभ मालूम होगा।

- आचार्य भद्रसेन
साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

20वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

आर्य महिला सशक्तिकरण का सफलतम माध्यम है आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन - धर्मपाल आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 20वां आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन आर्य समाज कीर्ति नगर में 6 मई 2018 को भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विभिन्न प्रान्तों के आर्य परिवारों से आए युवक-युवतियों ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय देने के साथ-साथ उन्हें कैसा जीवन साथी चाहिए इस विषय में खुलकर अपने विचार रखे।

राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने कोटा आकर बताया कि सम्मेलन में मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान युग में आर्य मर्यादानुरूप महिला सशक्तिकरण का सफलतम माध्यम है यह परिचय सम्मेलन। युवतियों का विवाह के लिए मंच पर आकर परिचय देना और उनके अंदर के आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला कार्य है। साथ ही इच्छानुरूप जीवन साथी का चयन स्त्री स्वतंत्रता एवं सशक्तिकरण की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

अपने सम्बोधन को गति देते हुए प्रधान जी ने कहा कि हम सब मनुष्य हैं। मनुष्य ही हमारी जाति है। क्योंकि प्रभु ने हमें जन्म से मनुष्य बनाया है। इसलिए समाज में प्रचलित जातिगत बंधनों को नहीं मानना चाहिए। समान गोत्र के विवाह से बचना चाहिए। इसी कारण वंशानुक्रमण एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वैज्ञानिक निकट एवं रक्त संबंधों में विवाह नहीं करने को कहते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी विवाह संबंधी विचारों में इसी बात को प्रमाण के साथ स्पष्ट किया है। महर्षि दयानंद ने गुण, कर्म और स्वभाव को ध्यान में रखकर विवाह करने के लिए प्रावधान किया है।

श्री धर्मपाल आर्य ने कहा इस वर्ष 25, 26, 27 और 28 अक्टूबर 2018 को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में होना निश्चित है इस सम्मेलन के अन्तर्गत दो आर्य विवाह परिचय सम्मेलन आयोजित किए जाने की मैं घोषणा करता हूं।

26 अक्टूबर उच्च शिक्षित प्रोफेशनल व उच्च आय वर्ग (मासिक आय पचास हजार से अधिक) के युवक-युवतियों का और 27 अक्टूबर को सभी शिक्षित व आय वर्ग के लिए युवक-युवतियों का सम्मेलन आयोजित किया जाएगा जिसमें आप अपने इष्टमित्रों, रिश्तेदारों को इन दोनों सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे इन दोनों सम्मेलनों में अधिक से अधिक आर्य परिवार लाभ उठा सकें।

कार्यक्रम में आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रथम सम्मेलन से बीसवें सम्मेलन तक पहुंचने की हमारी यात्रा की जो गति रही वह निश्चित रूप से सबके लिए प्रेरणादायी है कि अत्यल्प समय में हम इस उपलब्धि तक पहुंच सके। इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की जितनी भी सराहना की जाए उतनी ही कम है।

आर्य समाज कीर्ति नगर के मंत्री श्री सतीश चड्ढा ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि 20वें सम्मेलन की इन सीढ़ियों पर चढ़ते हुए कीर्तिनगर में यह दूसरी बार आर्य परिवार विवाह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि युवक-युवतियों ने बिना दहेज लिए विवाह करने के संकल्प व्यक्त किये।

श्री चड्ढा ने जानकारी देते हुए बताया कि सम्मेलन में राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा जी ने जानकारी देते हुए बताया कि इस सम्मेलन में जिन युवक-युवतियों का पंजीकरण किया गया है उनका फोटोयुक्त बायोडाटा विवरणिका पुस्तिका में प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तिका सभी पंजीकृत युवक-युवतियों को निःशुल्क प्रदान की गई है। श्री अर्जुन देव जी ने बताया कि प्रातः से ही बड़ी संख्या में युवक-युवतियों एवं अभिभावकों का आना प्रारम्भ हो गया था। देश के विभिन्न राज्यों से लोगों ने आकर इस सम्मेलन में भाग लिया। आने वाले सभी महानुभावों के लिए आर्य समाज कीर्तिनगर की ओर से प्रातः नाश्ते व दोपहर भोजन की व्यवस्था की गई थी।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अतिथियों मुख्य अतिथि सर्वश्री धर्मपाल आर्य, ओम प्रकाश आर्य, एस.पी. सिंह, कीर्ति शर्मा, ओम प्रकाश आर्य, अर्जुनदेव चड्ढा , सतीश चड्ढा, आर.सी. आर्य, बलदेव सचदेवा, सर्वश्रीमती कविता आर्या, वीणा आर्या, विभा आर्या ने सामूहिक दीप प्रज्वलन डॉ. ऋषिपाल शास्त्री द्वारा वेदमंत्रों ,के मंत्रोच्चारण से किया।

सम्मेलन में दिल्ली क्षेत्र के संयोजक श्री एस.पी. सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम स्थल पर पूछताछ, तत्काल रजिस्ट्रेशन, विवरणिका पुस्तिका, युवक-युवती बेज वितरण आदि के पृथक-पृथक काउन्टर लगाये गये थे। इन काउन्टरों की पूरी जिम्मेदारी श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती वीणा आर्या, कु. हविषा आर्या, कु. पर्णिका आर्या एवं सर्वश्री प्रवेश गोयल, मनोज नेगी, सौरभ यादव एवं अरुण प्रकाश ने सम्भाल रखी थी।

सम्मेलन में आये सभी युवक-युवतियों ने अपने माता-पिता के साथ आकर आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय दिया तथा कुछ ने उन्हें कैसा जीवनसाथी चाहिए इस बारे में अपनी इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर मेल-मिलाप समिति भी बनाई गई जिसने उपस्थित परिवारों को आपस में मिलाने व आपसी विचार विमर्श करने के लिए ओम प्रकाश आर्य, सतीश चड्ढा, शिव कुमार मदान, अर्जुनदेव चड्ढा, वीणा आर्या, विभा आर्या ने सहयोग किया।

सम्मेलन में आये हुए समस्त अतिथियों को आर्य समाज कीर्तिनगर के पदाधिकारियों द्वारा पीत वस्त्र से स्वागत किया गया व श्री अर्जुन देव चड्ढा व श्री आर. सी. आर्य ने सभी अतिथियों को राजस्थानी पगड़ी पहनाकर उनका सम्मान किया।

इस अवसर पर आर्य समाज कोटा द्वारा प्रकाशित 'जीवन है अनमोल है' पत्रक का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि ने पत्रक के मुख्य बिन्दुओं सकारात्मक सोच, मनुष्य जीवन के महत्त्व, तनाव से दूर रहें, अपनी क्षमताओं को पहचाने इत्यादि पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री ओम प्रकाश आर्य व शिव कुमार मदान उपप्रधान, एस.पी. सिंह दिल्ली संयोजक कीर्ति शर्मा व राजेन्द्र दुर्गा उप प्रधान, सतीश चड्ढा महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, बलदेव राज सचदेवा प्रधान, वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली, कंवरभान खेत्रपाल आर्य, पूर्व दिल्ली संयोजक, हर्ष प्रिय आर्य, ओ.पी. घई संरक्षक वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली, आर.सी. आर्य कोटा, सर्वश्रीमती वीणा आर्या, विभा आर्या, कविता आर्या व सुषमा सेठ, मंत्राणी आर्य समाज कीर्ति नगर इत्यादि का योगदान रहा।

- अर्जुन देव चड्ढा,
राष्ट्रीय संयोजक

- शेष पृष्ठ 6 पर

Veda Prarthana - II Regveda - 8

Let Us Help Each Other to be Virtuous and Discard What is Harmful in Life

- Acharya Gyaneshwarya

अश्मन्वती रीयते संरभध्वं उत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमो अशिवा ये असन् शिवान् वयमुत्तेरमाभिवाजान्।।

ऋग्वेद 10/53/8

Ashmanvati riyate samrabhadhvam uttish that pra tarta sakhayah. Atra jahimo ashiva ye asan shivan vayamutterema abhivajan.

Rig Veda 10:53:8

In this Veda mantra, a metaphor a river is used to descrbe how we should live in this world to find hapiness and fulfillment in life. The mantra states that on the other bank of this river, there are storehouses of knowledge, strength and bliss for us to obtain. However, there are several obstacles in crossing the river and a common person does not succeed in his/her effort. Many persons because of the obstacles drown while crossing the river, while others do not even have the courage to make an attempt and accept their unhappy stay on the current bank of the river.

The first obstacle in trying to cross the river is that while it is not too deep at the crossing site, nevertheless the river is fast flowing and wide. Therefore, one can lose one's balance and with minor error easily drown. the second obstacle is that the river does not have sand in its bottom but has slippery round stones whereby one cannot firmly plant one's feet at the bottom of the river. The third obstacle to safely cross the river is the heavy load one is carrying over one's head and shoulders which slows down the progress and makes one less stable in achieving proper and safe balance.

The metaphor of the river teaches us that if we want to have true long lasting peace, happiness, fulfillment, freedom, and absence of worries in our lives, then we will have to overcome the obstacles of pretense, dishonesty, infatuations or blind attachments to others, jealousy, greed and hoarding which perpetrate in our lives. If we have loaded ourselves with non-virtuous conduct (adharma), sinful enjoyments and vices, then we cannot succeed in obtaining true spiritual knowledge, lastingjoy or bliss in our lives.

The second important message of this mantra is that to succeed in our lives we need direction, guidance and help from others with more virtuous knowledge and spiritual experience than we possess. Otherwise, we are likely to fail in our life journeys full of many obstacles, distractions and miseries similar to one drowning in a fast flowing river with slippery stones. Without directions from an experienced teacher who knows the virtuous path (as well as lives accordingly), one would have great difficulty in being successful. Therefore, we should listen to lectures and messages of truly virtuous learned persons and read scriptures written by rishis (sages) to get inspired. Then we should find persons like-minded to us in our spiritual values and together in union with them successfully tackle the obstacles that come in our lives' journeys; alone we are less likely to succeed.

Another message in this mantra implies that it has been a very long time for us living an ordinary life full of sorrows and some joys bearing the fruits of our previous bad and good karmas. Now time has come to wake up from our past slumber and make a firm resolve and commitment in our mind that from hence onwards, "I will change my life for better by doing virtuous deeds and aiming higher."

The Veda mantra says, O human beings! If you want internal spiritual peace, harmony and joy, then you must permanently give up ashiva i.e. bad karmas at all three levels including thought, word and action. Unfortunately, in the modern world the ridiculousncss is that a person who lies or steals, is angry and/or jealous, lazy and/or careless, however, he/she still expects peace, harmony and joy in his/her life. This is impossible to happen. To obtain mental peace, harmony and joy one must only do shiva i.e. benevolent karmas such as gaining virtuous knowledge, make and carry out benevolent resolves and pledges, gain strength and health by eating properly and exercise. One must completely give up karmas which result in unhappiness, misery, fear, worries and lack of peace because while performing such bad karmas one cannot expect that their fruits will give one good or happy results.

Finally, the Veda mantra states that we should work in union with other persons around us to succeed in life. If people in our neighborhood, village, society or town are hungry or do not have enough to eat; lack basic material needs such as clean water, clothing, shelter, basic hygiene; many are sick; there is prevailing injustice, illiteracy and/or ignorance; under these circumst ances we cannot not expect to have peace, harmony and joy in our lives. We will only succeed if we work united with others and find our progress in the context of progress of all around us

To Be Continue....

अंधविश्वास की पोल-खोल कार्यक्रम की धूम महिलाओं व बच्चों ने मनोरंजन के साथ-साथ हकीकत को जाना

अंधविश्वास की पोलखोल कार्यक्रम, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के तत्त्वावधान में 15 अप्रैल से 30 अप्रैल 2018 तक विभिन्न आर्य समाजों व विद्यालयों में आयोजित किया गया जिसको श्री तिलकराज व उनके सहयोगी द्वारा संयोजित किया गया। विभिन्न प्रस्तुतियों में जहां मनोरंजन का समायोजन तो थी ही थी लेकिन शिक्षाप्रद प्रस्तुतियों की भरमार भी थी। जिस कारणों से स्वयं भू महाराज/भगवान/तांत्रिक/बाबा जनसाधारण भोली-भाली जनता को अपनी बातों के जाल व कुछ करतब जोकि हाथ की सफाई द्वारा भ्रमित किये जाते हैं और उसमें रसायन प्रक्रिया द्वारा जनता को बेवकूफ बनाकर लूटा जाता है। अज्ञान भय व भविष्य को सुन्दर-सुखमय बनाने हेतु जनता उनके भ्रम जाल में भंसकर बहुत बार तो पैसे के साथ-साथ अपनी इज्ज़त और नाजुक रिश्तों को भी दांव पर लगा देती है और बाद में वही कहावत चरितार्थ होती है कि 'अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत' इन्हीं भ्रमों और हाथ की सफाई को श्री तिलकराज जी ने बड़ी सुन्दर कथाओं द्वारा सजीव प्रदर्शन किया जैसे हाथ खून से रंगे होना, नारियल में से काला कपड़ा निकालना, पानी को जमा देना, नीबू में से खून निकल आना सरसों के तेल को हाथ पर लगाने से खून बन जाना इत्यादि। आज के वर्तमान समय में बहुत सारे बाबा, योगी (भोगी) व स्वयं को भगवान साबित करने के लिए बभूती देते हैं, प्रसाद देते हैं तथा अन्य इसी तरह की अनोखी कार्यवाहियां करते हैं जोकि केवल हाथ की सफाई और रसायन क्रिया के अतिरिक्त और कुछ नहीं होती है। विभिन्न कार्यशालाओं में यही समझाने का प्रयास किया गया जहां-जहां कार्यक्रम हुए उनमें से अधिकतर सदस्यों व आयोजकों द्वारा दोबारा ये कार्यशाला आयोजित करने का अनुरोध भी प्राप्त हुआ। विभिन्न विज्ञापन सूचनाओं व तस्वीरें देखकर आर्य समाज हापुड़, छतरपुर, खजुराहो, मध्य प्रदेश, सिलीगुड़ी, मुगलसराय आदि क्षेत्रों से कार्यशाला आयोजित करने का अनुरोध प्राप्त हुए, यदि सम्भव हुआ तो मौसम व व्यस्था के अनुकूल होने पर, अक्टूबर-नवम्बर में पुनः यह कार्यशालाएं आयोजित करवाने का प्रयास किया जाएगा। उन सभी आर्य समाजों व विद्यालयों के अधिकारियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं व धन्यवाद जिन्होंने इस कार्यक्रम को न केवल सराहा बल्कि अच्छी व्यवस्था द्वारा सफल किया।

-सतीश चड्ढा, संयोजक

'अंधविश्वास की पोल-खोल' कार्यक्रम सम्बन्धी प्रतिक्रियाएं

श्रीमती ममता मेहतानी- कार्यक्रम बहुत ही रोचक व मनोरंजक था जिससे भ्रमजाल में फंसे लोगों की भ्रांतियां समाप्त हुई और होंगी।

श्री नितिज्जय चौधरी - कार्यक्रम के द्वारा बच्चों का जहां मनोरंजन हुआ उनको एक बहुत बड़ी शिक्षा सरल तरीके से उपलब्ध भी हो सकी। जिसे वह उम्र भर याद रखेंगे और भ्रम में भी नहीं आएंगे।

श्रीमती नमिता नागपाल - इस कार्यक्रम के आयोजन हर बालक-बालिका को विस्तार से दिखाने व समझाने के लिए आयोजकों का बहुत-बहुत धन्यवाद, जनजाग्रति के लिए ऐसे आयोजन लगातार होते रहने चाहिए।

श्रीमती अनीता आर्य - ऐसे आयोजन को प्रवचनों के स्थान पर अपने सदस्यों, परिवार तथा विद्यालयों के छात्र-छात्रों को विस्तार पूर्वक दिखाना चाहिए ताकि मनोरंजन के साथ-साथ उत्सुक्तापूर्वक बात समझ में आ जाए।

आओ ! संस्कृत सीखें — वर्तमान काल के प्रत्यय (52)

गतांक से आगे....

पञ्च + इन्द्रियाणि = पञ्चेन्द्रियाणि
परम + ईश्वरः = परमेश्वरः
उप + ईक्षा = उपेक्षा
महा + इन्द्रः = महेन्द्रः
लता + इव = लतेव
यथा + इष्टः = यथेष्टः
रमा + ईशः = रमेशः
महा + ईश्वरः = महेश्वरः
अ / आ + उ / ऊ = ओ
प्रकाश + उत्सवः = प्रकाशोत्सवः
सूर्य + उदयः = सूर्योदयः
नव + ऊढा = नवोढा
जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः
महा + उत्सवः = महोत्सवः
लता + ऊर्ध्वम् = लतोर्ध्वम्
अ / आ + स = अर्
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः
राजा + ऋषिः = राजर्षिः

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग — तुलसीजी का ठाकुरजी से विवाह

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में पण्डित श्री रामचन्द्रजी देहलवी पानीपत पधारे। आपने श्रोताओं से कहा कि अब मैं व्याख्यान नहीं दूँगा। केवल शंका-समाधान करूँगा, आप लोग शंकाएँ कीजिए, मैं उत्तर दूँगा। एक सज्जन ने प्रश्न किया, ''आपके आगमन से कुछ दिन पूर्व यहाँ तुलसीजी से ठाकुर का विवाह सम्पन्न हुआ है। लोगों ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। आपका इस विषय में क्या विचार है?''

श्रद्धेय पण्डितजी ने कहा, ''मुझे तो लोगों से भी अधिक हर्ष हुआ है। मेरे हर्ष का कारण यह है कि यह विवाह महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तानुसार जाति-बन्धन तोड़कर हुआ है, परन्तु एक बात स्मरण रखें कि विवाह का मुख्य उद्देश्य सन्तान की उत्पत्ति है। ये दम्पती (तुलसी का पैधा व पत्थर का ठाकुर) संसार से निःसन्तान ही जाएँगे। इनकी गोदी कभी भी हरी न होगी।''

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

यज्ञ के प्रचार-प्रसार का ऐतिहासिक कार्य : अभी तक 108 यज्ञ

आर्यसमाज प्रीतविहार ने यज्ञ के प्रचार-प्रसार की दुनिया में एक ऐतिहासिक कार्य मकर सक्रांति तदानुसार 14 जनवरी, 2018 से आरम्भ किया है। प्रतिदिन आर्यसमाज प्रीतविहार द्वारा प्रीत विहार, निर्माण विहार, मधुवन, शंकर विहार, शकरपुर, स्वास्थ्य विहार, लक्ष्मी नगर, डिफेंस इन्क्लेव, न्यू राजधानी इन्क्लेव, गगन विहार, मौसम विहार, सुख विहार, राधे याम पार्क, बलदेवपार्क, जगतपुरी, पटपढ़गंज सोसाइटी, दयानन्द विहार, सूरजमल विहार, योजना विहार, रामप्रस्थ, वैशाली, मण्डावली, पाण्डव नगर, जाग्रति इन्क्लेव, आनन्द विहार, राम विहार आदि अनेक कॉलोनियों के पार्क में प्रतिदिन यज्ञ एवं भजनों का कार्यक्रम रखा जाता है। अब तक 108 यज्ञ सम्पन्न हो चुके हैं और यह काम निरन्तर चल रहा है। लगभग 30 से 140 लोग प्रतिदिन इस कार्य में भाग लेकर आर्यसमाज प्रीतविहार से जुड़ रहे हैं।

स्वयं आर्यसमाज के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी नित्य प्रति जाकर इन यज्ञों का निरीक्षण करते हैं तथा आर्यसमाज प्रीत विहार द्वारा किए जा रहे कार्यों तथा यज्ञ की वैज्ञानिक व्याख्या से लोगों को परिचित भी कराते हैं। आर्यसमाज प्रीत विहार ने इस कार्य के लिए एक पुरोहित व एक भजनोपदेशक अलग से रखा है। आर्यसमाज के सेवक और आर्य वीरदल के कार्यकर्ता एक दिन पहले जाकर क्षेत्र में पत्रक बाँटकर आते हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित यज्ञ के वैज्ञानिक विवेचना के पत्रक व श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी द्वारा लिखित 'यह पाखण्ड और अंधवि वास' पुस्तक नि:शुल्क बाँटी जाती है। अभी तक 108 सफल यज्ञ करने के उपरान्त भी यह शुभ कार्य निरन्तर जारी है। *-कीर्ति राज दीवान, कोषाध्यक्ष*

आर्य समाज भेरा एन्क्लेव का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज भेरा एन्क्लेव, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर शहीद भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु के 32वीं पावन बलिदान दिवस पर विराट कवि सम्मेलन 22 मार्च 2018 को आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम आर्य समाज भेरा एन्क्लेव के प्रधान श्री ऋषि चन्द्र मोहन की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुभाष गुप्ता, (वरिष्ठ उपप्रधान महाराजा अग्रसेन अस्पताल, पंजाबी बाग) एवं श्रीमती मीना गुप्ता समाज सेवी पंजाबी बाग थीं। इस अवसर पर महाराजा अग्रसेन अस्पताल की ओर से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया।

-ऋषि श्री चन्द्रमोहन खन्ना, प्रधान

गुरुकुल हेतु आचार्य चाहिए

महाशय धर्मपाल जी के आशीर्वाद, सार्वदेशिक सभा के सहयोग से आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के अन्तर्गत बर्मा में में बनने वाले गुरुकुल के लिए सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है। गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि से शिक्षण प्राप्त आचार्य महानुभाव जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषा पर समानाधिकार रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र, बायोडाटा, योग्यता आदि प्रमाण पत्रों एवं पासपोर्ट की फोटो प्रति '**मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर भेजें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें- *विनय आर्य, उपमन्त्री*

बैंकॉक में पुरोहित चाहिए

थाईलैंड की राजधानी स्थित आर्यसमाज बैंकॉक के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि से शिक्षण प्राप्त पुरोहित महानुभाव जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषा पर समानाधिकार रखते हों तथा समस्त संस्कार सम्पन्न कराने की योग्यता रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र विस्तृत बायोडाटा, योग्यता आदि प्रमाण पत्रों एवं पासपोर्ट की फोटो प्रति '**मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर भेजें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। *- विनय आर्य, उपमन्त्री*

चुनाव समाचार

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली राज्य

प्रधान - आचार्य प्रेमपाल शास्त्री
मंत्री - आचार्य मेघश्याम वेदालंकार
कोषाध्यक्ष - आचार्य अभयदेव शास्त्री

शोक समाचार

श्री शिवकुमार अग्रवाल जी का पत्नी शोक

आर्यसमाज विवेक विहार के कोषाध्यक्ष एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सुरेन्द्र आर्य जी के साढू भाई श्री शिव कुमार अग्रवाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती उषा अग्रवाल जी का दिनांक 26 अप्रैल 2018 को मात्र 50 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 8 मई, 2018 को आर्यसमाज विवेक विहार में सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 4 से 17 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद

प्रवेश शुल्क 500/-रुपये (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **ऋषिपाल आचार्य, संयोजक, मो. 09811687124**

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आरत्मरक्षण शिविर

7 मई से 3 जून,18 : आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज इलाहाबाद (उ.प्र.)

विस्तृत जानकारी के लिए श्री पंकज जायसवाल शिविराध्यक्ष मो. 9415365576 सम्पर्क करें - **-साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका**

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

37वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 17 से 27 मई, 2018

आर्यजन अभी से तिथियां नोट कर लेवें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। जानकारी के लिए सम्पर्क करें - *जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री (9810040982)*

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 3 से 10 जून 2018, एम.डी.एच. इंटरनेशनल स्कूल द्वारका सै.6

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- **श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372**

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज जहांगीरपुरी, के-1046, जहांगीरपुरी, नई दिल्ली-110033 के लिए एक शास्त्री सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव मो. 8368886214, 9999145278 पर सम्पर्क करें। **- रामभरोसे आर्य, मन्त्री**

प्रवेश सूचना

आर्य बाल गृह, आर्य कन्या सदन दरियागंज व चन्द आर्य विद्या मन्दिर में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य बाल गृह एवं आर्य कन्या सदन, वीरेश प्रताप परिसर, 1488, पदौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली में नर्सरी से तीसरी कक्षा तथा चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, देसराज परिसर, सी ब्लाक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली में छठी से नौवीं कक्षा तक (केवल बालिकाओं हेतु) प्रवेश प्रारम्भ हो गये हैं।

यदि आपके या आपके परिवार व ईष्ट मित्रों की जानकारी में कोई बालक-बालिका आती है जिसे संस्था की सहायता की आवश्यकता है और वह आगे पढ़ना चाहता/चाहती है उसे आप अपने संस्तुति पत्र के साथ भिजवाये।

- नीतिन्जय चौधरी, 011-23272084, 23260428

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक महानुभाव 15 जून से 15 जुलाई 2018 के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें

-आचार्य प्रणवीर शास्त्री, मो. 09907056726, 09424471288

गुरु विरजानन्द गुरुकुल एवं गौशाला में प्रवेश प्रारम्भ

गुरु विरजानन्द गुरुकुल, इन्दौर में आर्ष पाठ्यविधि से कक्षा 4थी उत्तीर्ण बालकों के लिए प्रवेश प्रारम्भ हैं जो अभिभावक वैदिक संस्कृति, वेद, यज्ञ, योग एवं संस्कार युक्त शिक्षा दिलाना चाहते हैं वे शीघ्र से शीघ्र सम्पर्क करें। स्थान सीमित है। सम्पर्क करें- 09977987777, 09977967777 *-प्रणवीर शास्त्री, आचार्य*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा के संयुक्त के तत्त्वावधान में

नि:शुल्क योग साधना एवं सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 3 जून 2018 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष **सत्यार्थ प्रकाश** का स्वाध्याय कराया जाएगा। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 800 रुपये है। लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 27 मई 2018 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 3 जून 2018 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखवीर सिंह आर्य, शिविर संयोजक,
मो. 09350502175, 09540012175, 07289850272

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2018–19–2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10/11 मई, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018–19–2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 मई, 2018

समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी का जन्म शताब्दी समारोह

दिनांक : 10 जून 2018 (रविवार) समय : दोपहर 3 बजे से सायं 7 बजे
स्थान : मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, अनेक ग्रन्थों के रचियता स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के 100वें जन्मदिवस पर समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह में आर्य जगत के गणमान्य साधु–संन्यासी, राजनेता, आर्य समाजों के पदाधिकारीगण पधारकर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा के साथ उनके पुण्य कार्यों का स्मरण करेंगे।

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधाकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाकर पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी के कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करें।

निवेदक
धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामन्त्री), विद्यामित्र ठुकराल (कोषाध्यक्ष) — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
श्रद्धानन्द शर्मा (अध्यक्ष), डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भटनागर (महासचिव) — समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद

प्रतिष्ठा में,

सभा द्वारा घोषित अंधविश्वास निरोधक वर्ष –2018 के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर आयोजित अंधविश्वास पोल–खोल कार्यक्रम

आर्य समाज जनकपुरी, सी ब्लॉक, पंखा रोड
आर्य समाज सैनिक विहार व रानीबाग द्वारा
स्थान- केप्टन सतीश मार्ग, स्वामी श्रद्धानन्द पार्क, ऋषिनगर, रानीबाग- दिल्ली
आर्य समाज शादी खामपुर द्वारा
कार्यक्रम स्थान- अपोजिट मदर डेयरी बूथ, शिव चौक, साउथ पटेल नगर
कार्यक्रम स्थान- आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली
रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार, कनाट प्लेस, नई दिल्ली
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, रमेश नगर, नई दिल्ली
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, न्यू मोतीनगर
दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली
दयानन्द माडल स्कूल, पटेल नगर नई दिल्ली
आर्य समाज मोहन गार्डन, नई दिल्ली
आर्य समाज द्वारका, नई दिल्ली
आर्य समाज विकास नगर द्वारा
कार्यक्रम स्थान- डी. डी. ए. पार्क हस्तसाल, नई दिल्ली
आर्य समाज जनकपुरी, डी ब्लॉक, नई दिल्ली
पार्क संख्या-2, पाकेट ए-2, निकट विश्राम चौक, रोहिणी सेक्टर 5- दिल्ली-85
बिरला आर्य कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, कमला नगर
आर्य समाज जहांगीरपुरी द्वारा
स्थान- आर्य हंसराज माडल स्कूल, जहांगीरपुरी, दिल्ली
आर्य समाज सरोजनी नगर द्वारा
रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल
आर्य समाज गोविन्दपुरी दिल्ली
आर्य समाज राजनगर पालम कॉलोनी दिल्ली
आर्य अनाथालय पटोदी हाउस दरियागंज
आर्य समाज मंदिर सुशांत लोक (डी ब्लॉक) गुरुग्राम
चन्द्र आर्य विद्या मंदिर ईस्ट ऑफ़ कैलाश

आर्य शिशुशाला आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग पश्चिम
आर्य समाज ए. जी. सी. आर एन्क्लेव द्वारा
कार्यक्रम स्थान- सेंट्रल पार्क ए.जी. सी.आर. कड़कड़डूमा
आर्य समाज नांगल राया द्वारा
कार्यक्रम स्थान- सहयोगी पार्क आर्य समाज रोड, नांगल राया

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, दिल्ली
आर्य समाज कीर्तिनगर द्वारा
कीर्ति पार्क एफ ब्लॉक कीर्ति नगर
आर्य समाज डी ब्लॉक विकासपुरी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह